॥ हयग्रीव संपदास्तॊत्रम ॥

हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवॆति वादिनम ।
नरं मुंचंति पापानि दरिद्रमिव यॊषितः ॥ १ ॥

हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवॆति यॊ वदॆत ।
तस्य निस्सरतॆ वाणी जह्नुकन्याप्रवाहवत ॥ २ ॥

हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवॆति यॊ ध्वनिः ।
विशॊभतॆ स वैकुंठकवाटॊद्घाटनक्षमः ॥ ३ ॥

श्लॊकत्रयमिदं पुण्यं हयग्रीवपदांकितम ।
वादिराजयतिप्रॊक्तं पठतां संपदां पदम ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीमद्वादिराजपूज्यचरणविरचितं हयग्रीवसंपदास्तॊत्रं संपूर्णम ॥

www.yousigma.com